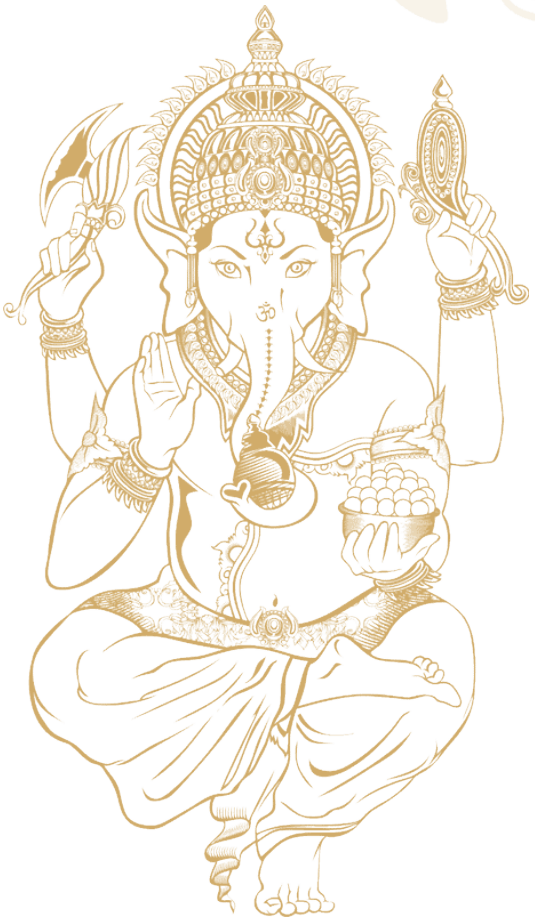

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121166602

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
20-21/01/1997	जन्म तिथि	8-09/08/1998
सोम-मंगलवार	दिन	शनि-रविवार
घंटे 02:39:00	जन्म समय	05:28:00 घंटे
घटी 48:31:29	जन्म समय(घटी)	59:14:23 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:14:24	सूर्योदय	05:46:14
17:50:13	सूर्यास्त	19:06:50
23:48:59	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:08

विंशोत्तरी मंगल 0वर्ष 0मा 26दि गुरु 17/02/2015 17/02/2031		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी मंगल 1वर्ष 2मा 22दि गुरु 31/10/2017 31/10/2033	
गुरु	06/04/2017	12:51:35	धनु	बुध व	सिंह	01:07:07	गुरु	19/12/2019
शनि	18/10/2019	06:00:23	मक	गुरु व	मीन	03:26:48	शनि	01/07/2022
बुध	23/01/2022	19:31:18	धनु	शुक्र	कर्क	00:48:47	बुध	06/10/2024
केतु	30/12/2022	08:49:13	मीन	शनि	मेष	09:45:09	केतु	12/09/2025
शुक्र	30/08/2025	06:55:07	कन्या व	राहु व	सिंह	07:37:01	शुक्र	13/05/2028
सूर्य	18/06/2026	06:55:07	मीन व	केतु व	कुंभ	07:37:01	सूर्य	01/03/2029
चन्द्र	18/10/2027	10:35:37	मक	हर्ष व	मक	16:42:14	चन्द्र	01/07/2030
मंगल	23/09/2028	03:45:37	मक	नेप व	मक	06:30:21	मंगल	07/06/2031
राहु	17/02/2031	11:09:50	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	11:28:31	राहु	31/10/2033

लग्न-चलित

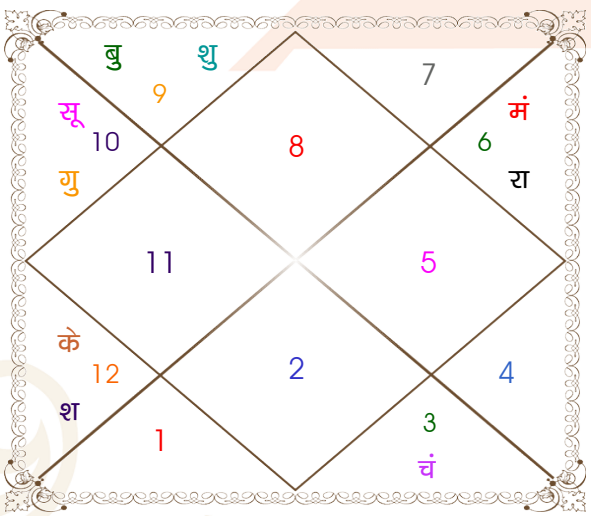

लग्न-चलित

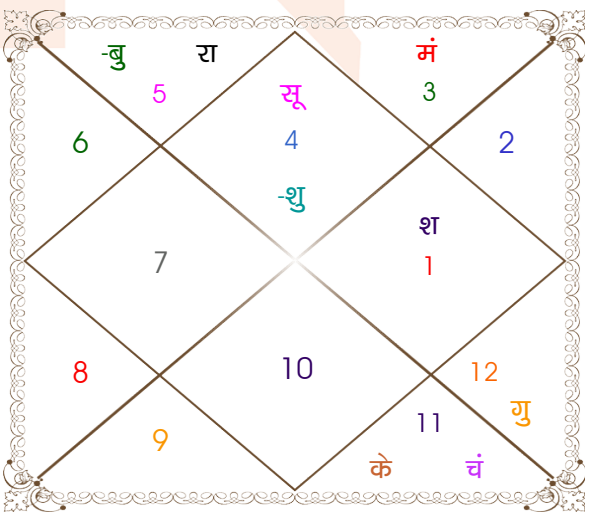

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	सर्प	सिंह	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	शनि	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	मिथुन	कुम्भ	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	13.00		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि Lवामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि L का नक्षत्र मृगशिरा है।

L का वर्ग मार्जार है तथा L का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार L और L का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

L मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

L मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल L कि कुण्डली में द्वादश भाव में मिथुन राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु L कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता

है।

L तथा L में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।